हिन्दी मास के अन्तर्गत दिनांक 29.09.2025 को भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में **''राजभाषा, विज्ञान एवं समाज**'' विषय पर एक दिवसीय **राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयों में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार–विमर्श किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. संजय सिंह, केन्द्र प्रमुख, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं अन्य आमंत्रित वक्ता यथा प्रो. दिनेश मणि, प्रो. पी. सी. मिश्रा, प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव एवं सन्तोष शुक्ला द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। इसी क्रम में उन्होने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है। आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रो. दिनेश मणि, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान और समाज के बीच ज्ञान का सेतु भी है। वैज्ञानिक तथ्यों और अनुसंधानों को हिन्दी में प्रस्तुत करने से यह जनसामान्य तक अधिक प्रभावी रूप में पहुंचते हैं। आमंत्रित वक्ता प्रो. पी.सी. मिश्रा, सेवानिवृत्त, उपनिदेशक, आयकर विभाग तथा पूर्व नराकास सचिव द्वारा शासकीय काम–काज तथा लेखन में हिन्दी को सरलता से प्रस्तुत करने के साथ ही राजभाषा के प्रयोग सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला गया। आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज द्वारा साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज द्वारा किया गया। संगोष्ठी के अन्त में डॉ. सन्तोष शुक्ला, अधिशाषी सचिव, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार (नासी) ने हिन्दी को ज्ञान–विज्ञान की भाषा के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। आयोजित संगोष्ठी के समापन समारोह में दोनो संस्थानों के कर्मचारियों को हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया। आयोजित कार्यक्रम में ई. आर.सी., प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, श्री आलोक यादव, डॉ. कुमुद दूबे, एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ डॉ. एस.डी. शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता के साथ अन्य कर्मचारी गण आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
29 सितम्बर 2025

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
(हिन्दी मास - 2025 के अन्तर्गत आयोजित)
29 सितम्बर 2025
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज, उ.प्र.
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून)
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत, प्रयागराज
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत स्वायत्त संस्था

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
(हिन्दी मास - 2025 के अन्तर्गत आयोजित)
29 सितम्बर 2025
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून)

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
29 सितम्बर 2025

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
(हिन्दी मास - 2025 के अन्तर्गत आयोजित)
29 सितम्बर 2025

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
(हिन्दी मास - 2025 के अन्तर्गत आयोजित)
29 सितम्बर 2025
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून)

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
(हिन्दी मास - 2025 के अन्तर्गत आयोजित)
29 सितम्बर 2025
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून)

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

वैज्ञानिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
राजभाषा, विज्ञान एवं समाज
(हिन्दी मास - 2025 के अन्तर्गत आयोजित)
29 सितम्बर 2025
भा.रा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज, उ.प्र.

PROFESSOR A.G.K. MENON HALL

विज्ञान की जानकारी हिन्दी में होने से समाज की भागीदारी व नवाचार को गति मिलती है : डॉ संजय सिंह

➔ राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

प्रयागराज। हिन्दी मास के अन्तर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को 'राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयों में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार विमर्श किया गया। संगोष्ठी में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। उन्होने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है। वक्ता प्रो. दिनेश मणि, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान और समाज के बीच ज्ञान का सेतु भी है। वैज्ञानिक तथ्यों और अनुसंधानों को हिन्दी में प्रस्तुत करने से यह जनसामान्य तक अधिक प्रभावी रूप में पहुंचते हैं। वक्ता पी.सी. मिश्रा, सेवानिवृत्त, उपनिदेशक, आयकर विभाग तथा पूर्व नराकास सचिव द्वारा शासकीय काम-काज तथा लेखन में हिन्दी को सरलता से प्रस्तुत करने के साथ ही राजभाषा के प्रयोग सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला गया। प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज ने साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज ने किया। अन्त में डॉ. सन्तोष शुक्ला, अधिशाषी सचिव, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार ने हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के समापन समारोह में दोनो संस्थानों के कर्मचारियों को हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में ई.आर.सी., प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर डॉ. आलोक यादव, डॉ. कुमुद दुबे एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. एस.डी. शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता एवं अन्य कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हाईस्कूल परीक्षा वर्ष 2010 अनुक्रमांक

संजय श्रीवास्तव आईकोनिक पीस

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज। हिन्दी मास के अन्तर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में

'राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयो में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. संजय सिंह, केन्द्र प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं अन्य आमंत्रित वक्ता यथा प्रो. दिनेश मणि, प्रो. पी. सी. मिश्रा एवं प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव एवं संतोष शुक्ला द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। इसी क्रम में उन्होने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है। आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रो. दिनेश मणि, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान और समाज के बीच ज्ञान का सेतु भी है। आमंत्रित वक्ता पी.सी. मिश्रा, सेवानिवृत्त, उपनिदेशक, आयकर विभाग तथा पूर्व नराकास सचिव द्वारा शासकीय काम-काज तथा लेखन में हिन्दी को सरलता से प्रस्तुत करने के साथ ही राजभाषा के प्रयोग सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला गया। आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज द्वारा साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज द्वारा किया गया। संगोष्ठी के अन्त में डॉ. सन्तोष शुक्ला, अधिशाषी सचिव, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार ने हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। आयोजित संगोष्ठी के समापन समारोह में दोनो संस्थानों के कर्मचारियों को हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया।

विज्ञान की जानकारी हिन्दी में होने से समाज की भागीदारी व नवाचार को गति मिलती हैः डॉ संजय सिंह

वॉइस ऑफ इलाहाबाद

प्रयागराज (हि.स.)। हिन्दी मास के अन्तर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को 'राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयों में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार विमर्श किया गया।

संगोष्ठी में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। उन्होने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है।

वक्ता प्रो. दिनेश मणि, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान और समाज के बीच ज्ञान का सेतु भी हैं। वैज्ञानिक तथ्यों और अनुसंधानों को हिन्दी में प्रस्तुत करने से यह जनसामान्य तक अधिक प्रभावी रूप में पहुंचते हैं।

वक्ता पी.सी. मिश्रा, सेवानिवृत्त, उपनिदेशक, आयकर विभाग तथा पूर्व नराकास सचिव द्वारा शासकीय काम-काज तथा लेखन में हिन्दी को सरलता से प्रस्तुत करने के साथ ही राजभाषा के प्रयोग सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला गया। प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज ने साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज ने किया। अन्त में डॉ. सन्तोष शुक्ला, अधिशाषी सचिव, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार ने हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के समापन समारोह में दोनो संस्थानों के कर्मचारियों को हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में ई.आर.सी., प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर डॉ. आलोक यादव, डॉ. कुमुद दुबे एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. एस.डी. शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता एवं अन्य कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

विज्ञान की जानकारी हिन्दी में होने से समाज की भागीदारी व नवाचार को गति मिलती है: संजय

⇨ राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

प्रयागराज, (अमर चेतना)। हिन्दी मास के अन्तर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयों में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार विमर्श किया गया। संगोष्ठी में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। उन्होने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है। वक्ता प्रो. दिनेश मणि, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान और समाज के बीच ज्ञान का सेतु भी है। वैज्ञानिक तथ्यों और अनुसंधानों को हिन्दी में प्रस्तुत करने से यह जनसामान्य तक अधिक प्रभावी रूप में पहुंचते हैं। वक्ता पी.सी. मिश्रा, सेवानिवृत्त, उपनिदेशक, आयकर विभाग तथा पूर्व नराकास सचिव द्वारा शासकीय काम-काज तथा लेखन में हिन्दी को सरलता से प्रस्तुत करने के साथ ही राजभाषा के प्रयोग सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला गया। प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज ने साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज ने किया। अन्त में डॉ. सन्तोष शुक्ला, अधिशाषी सचिव, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार ने हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के समापन समारोह में दोनो संस्थानों के कर्मचारियों को हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में ई.आर.सी., प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर डॉ. आलोक यादव, डॉ. कुमुद दुबे एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. एस.डी. शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता एवं अन्य कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया

सहज शक्ति संवाददाता

प्रयागराज । भा.वा.अ.शि.प.पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 'राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयो में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. संजय सिंह, केन्द्र प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं अन्य आमंत्रित वक्ता यथा प्रो. दिनेश मणि, प्रो. पी. सी. मिश्रा एवं प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव एवं संतोष शुक्ला द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। इसी क्रम में उन्होने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है। आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज द्वारा साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में हिंदी पर चर्चा

प्रयागराज। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी हुई। इसमें विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयों पर हिंदी भाषा की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने राजभाषा एवं विज्ञान में हिंदी के समावेश पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इस मौके पर डॉ. संतोष शुक्ला, प्रो. दिनेश मणि, प्रो. पीसी मिश्रा, रतन कुमार गुप्ता, डॉ. कुमुद दुबे मौजूद रहे।

हिन्दुस्थान समाचार
Hindusthan Samachar
Tuesday, 30 September, 2025

SUBSCRIBER LOGIN
STAFFLOGIN
HSNS LOGIN

विज्ञान की जानकारी हिन्दी में होने से समाज की भागीदारी व नवाचार को मिलती है गति : डॉ संजय सिंह

29 Sep 2025 18:33:32

प्रयागराज, 29 सितंबर (हि.स.)। हिन्दी माह के अन्तर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को "राजभाषा, विज्ञान एवं समाज विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विज्ञान तकनीकी और सामाजिक विषयों में हिन्दी भाषा की भूमिका पर विचार विमर्श किया गया।

संगोष्ठी में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने राजभाषा एवं विज्ञान में हिन्दी के समावेश पर चर्चा किया साथ ही हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। उन्होंने बताया कि यदि विज्ञान की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में दी जाए, तो समाज की भागीदारी बढ़ती है और नवाचार को गति मिलती है।

वक्ता प्रो. दिनेश मणि, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान और समाज के बीच ज्ञान का सेतु भी है। वैज्ञानिक तथ्यों और अनुसंधानों को हिन्दी में प्रस्तुत करने से यह जनसामान्य तक अधिक प्रभावी रूप में पहुंचते हैं।

वक्ता पी.सी. मिश्रा, सेवानिवृत्त, उपनिदेशक, आयकर विभाग तथा पूर्व नराकास सचिव द्वारा शासकीय काम-काज तथा लेखन में हिन्दी को सरलता से प्रस्तुत करने के साथ ही राजभाषा के प्रयोग सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला गया। प्रो. स्वप्निल श्रीवास्तव, ईविंग क्रिश्चन कॉलेज, प्रयागराज ने साहित्य में विज्ञान तथा समाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. पवित्रा टण्डन, उपसचिव, नासी, प्रयागराज ने किया। अन्त में डॉ. सन्तोष शुक्ला, अधिशाषी सचिव, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सरकार ने हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के समापन समारोह में दोनो संस्थानों के कर्मचारियों को हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में ई.आर.सी., प्रयागराज की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर डॉ. आलोक यादव, डॉ. कुमुद दुबे एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. एस.डी. शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता एवं अन्य कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्थान समाचार / विद्याकांत मिश्र